इस्तिकामत का मकाम

शैख मुहम्मद इशाक मुलतानी.

नोटः आप से दरखास्त है की इसे
भाषा या ग्राम्मर का अदब ना समझे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

एक मरतबा हजरत सिरी सकती (रह) जा रहे थे दोपहर का वकत था उन्हे निंद आ गयी वो केलूला की नीयत से एक दरख्त के नीचे सो गये कुछ देर लेटने के बाद जब उन्की आंख खुली तो उन्हे एक आवाज सुनाई दी, उन्होने गौर किया तो पता चला कि वो जिस दरख्त के नीचे लेटे हुवे थे उसी दरख्त मे से आवाज आ रही थी,

दरख्त उनसे कह रहा था ऐ सिरी तु मेरे जैसा हो जा, वो इस आवाज को सुनकर बहुत हैरान हुवे, जब पता चला कि ये आवाज दरख्त से आ रही हे तो आपने इस दरख्त से पूछा, ए दरख्त मे तेरे जैसा कैसे बन सकता हू? दरख्त ने जवाब दिया ऐ सिरी जो लोग मुझ पर पत्थर फेकते हे मे इन लोगो की तरफ अपने फल लौटाता हू, इसलिये तु भी मेरे जैसा हो जा, वो उस्की बात सुनकर और भी ज्यादा हैरान हुवे,

मगर अल्लाह वालो को अल्लाह की तरफ से खास

समझदारी मिली हुई होती हे, इसलिये उन्के जहन मे फौरन ख्याल आया कि अगर ये दरख्त इतना ही अच्छा हे जो उसे पत्थर मारे तो ये उसे फल देता हे, तो फिर अल्लाह ने दरख्त की लकडी को आग की गिजा क्यू बनाया?

उन्होंने पूछा ए दरख्त अगर तू इतना ही अच्छा हे तो ये बता कि अल्लाह ने तुझे आग की गिजा क्यू बना दिया?

इस पर दरख्त ने जवाब दिया मेरे अन्दर खूबी भी बहुत बडी हे मगर इस्के साथ ही एक खामी भी बहुत बडी हे और इस खामी ने मेरी इतनी बडी खूबी पर पानी फेर दिया हे, अल्लाह को मेरी खामी इतनी ना पसन्द हे कि अल्लाह ने मुझे आग की गिजा बना दिया हे, मेरी खामी येहे कि जिधर की हवा चलती हे मे उधर ही जुक जाता हू, यानी मेरे अंदर इस्तिकामत नही हे.

हवाला: एक हज़ार अनमोल मोती उर्दु से मज़मून का खुलासा लिप्यान्तरण किया गया हे.